M.A.(Education),part-1,paper-VI
Presented by Dr.Pallavi
Topic- शैक्षिक अनुसंधान का क्षेत्र(Scope of Educational Research),शैक्षिक अनुसंधान के सोपान (Steps of Educational Research)

4 शैक्षिक अनुसंधान का क्षेत्र (Scope of Educational Research). शैक्षिक अनुसंधान का क्षेत्र शिक्षा से सम्बन्धित है। शिक्षा का क्षेत्र इतना व्यापक है कि शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र को सीमाबद्ध करना कठिन कार्य है। शिक्षा के सभी पक्ष परस्पर एक दूसरे में इस प्रकार अन्तर्निहित हैं कि किसी भी वर्गीकरण में क्षेत्रों को एक दम पृथक रखना असम्भव सा प्रतीत होता है। अनेक शिक्षाविदों ने शिक्षा का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है किन्तु उनके वर्गीकरण के आधार पृथक-पृथक रहे है।

कुछ शिक्षाविदों के वर्गीकरण का आधार शिक्षा के विभिन्न स्तरों कों बनाया है तो कुछ ने पाठ्यक्रम की विशेषताओं को यदि हम शिक्षा के वैज्ञानिक तथा कलात्मक अंग पर विचार करते हैं तो हम शिक्षा तथा शैक्षिक क्षेत्र को निम्न वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

1. शिक्षा मनोविज्ञान-शिक्षा का उद्देश्य बालक का बौद्धिक सामाजिक और संवेगात्मक विकास करना है । इन पक्षों का विकास विभिन्न प्रकार के कार्यों तथा व्यवहारों को सीखकर ही किया जा सकता है। बालक का शिक्षण घर तथा विद्यालय दोनों स्थलों पर चलता है। इन दोनों स्थानों पर वातावरण किस प्रकार का हो कि प्रसाशित विकास हो सके, जो अनुसंधान द्वारा ही ज्ञात हो सकता है। अधिगम में नियमों में और भी अनुसंधान की आवश्यकता है व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक तत्व जैसे अभिप्रेरणा, अभिवृत्ति, रुचि, आदि अध्ययन गहन रूप में होना चाहिए। सामान्य बालकों के अतिरिक्त असामान्य एवं प्रतिभाशाली बालकों के विशेष अध्ययन पर भी वल देना चाहिए।

2. शिक्षा दर्शन-दर्शन का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। दर्शन हो शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करता है। दर्शन द्वारा जीवन के लक्ष्यों का निर्धारण होता है। शिक्षा का उद्देश्य दर्शन द्वारा निर्धारित इन मूल्यों व लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। हमारे देश में आज प्राचीन अध्यात्मवाद तथा नवीन भौतिकवाद में द्वंद्र चल रहा है। हम अपने प्राचीन सांस्कृतिक मूल्यों को भूल रहे हैं। आज देश में इस बात की आवश्यकता है कि अनुसंधान द्वारा आध्यात्मवाद तथा भौतिक याद में सन्तुलन स्थापित करते हुए अपने अतीत पर आधारित शिक्षा दर्शन का विकास किया जाय।

3. शिक्षा-इतिहास- शिक्षा के प्राचीन इतिहास का सिंहावलोकन भावी शिक्षा की योजना के निर्माण के लिए आवश्यक है । भविष्य की योजनाओं के लिए अतीत तथा वर्तमान से निकाले हुए निष्कर्षों का प्रयोग करने में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। शैक्षिक अनुसंधान की सहायता से हम प्राचीन तथा वर्तमान इतिहास का मूल्यांकन करके भावी शिक्षा की योजना बना सकते हैं।

4. शैक्षिक प्रशासन- हमारे देश में शैक्षिक प्रशासन अनुसंधान की दृष्टि से अछूता रहा है। शिक्षा प्रशासन की ओर अनुसंधान कर्ताओ ने भी कम ध्यान दिया है। हमारे देश में शैक्षिक प्रशासन स्तरीय है। यहाँ विभिन्न स्तरों पर नियुक्त प्रशासकों के लिए आवश्यक गुणों तथा कर्तव्यों का अनुसंधान द्वारा पत्ता लगाना आवश्यक है। इन गुणों का ज्ञान प्रशासकों के चयन में सहायक होता है। प्रशासन के क्षेत्र में विद्यालय में भौतिक सुविधाओं की व्यवस्था, के नियनंत्रण को केन्द्रोयकरण अथवा विकेन्द्रीयकरण, प्रधानाध्यपाक तथा अध्यापकों के मध्य सहयोग, समय चक्र का निर्माण, धन का विभिन्न मदों में वितरण, पाठ्सहगामी क्रियाओं को अवस्था सम्बन्धी अनेक समस्याएँ है जिनमें अनुसंधान की आवश्यकता है।

5. शैक्षिक समाज-शास्त्र- हमारे देश में शिक्षा का विस्फोट होने से विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर से सम्बन्धित बालक एक कक्षा में अध्ययन के लिए एक साथ एकत्रित होते हैं। शैक्षिक अनुसंधान के साथ उनके सम्बन्धों का अध्ययन करना होगा, ताकि कक्षा एवं विद्यालय में उचित प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध विकसित करने के उपाय प्रयोग में लाये जा सके।

6. शैक्षिक संगठन एवं पाठ्यक्रम- शैक्षिक संगठन के अन्तर्गत विद्यालय की सभी आन्तरिक व्यवस्थाओं का समावेश होता है और इन आन्तरिक व्यवस्था का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास पर सीधा असर पड़ता है। इस कारण विद्यालय संगठन के क्षेत्र में अनुसंधान का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शैक्षिक अनुसंधान के द्वारा विद्यालय में स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया जा सकता है। जिनमें बालक में व्यक्तित्व का य्थोचित विकास हो सके। पाठ्यक्रम विद्यालय कार्यक्रम का प्रमुख अंग है। प्रत्येक स्तर तथा प्रत्येक विषय के पाठ्यक्रम के मूल्यांकन की समय-समय पर यह जाँच करने के लिए आवश्यकता होती है कि इसके द्वारा शिक्षा के लक्ष्यों की प्राप्ति हो रही है या नहीं

7.वित्त प्रबन्ध-भारत जैसे निर्धन देश में वित्त की कमी एक सबसे बड़ी समस्या है। अतः शैक्षिक अनुसंधान द्वारा यह प्रयास होना चाहिए कि प्रत्येक रुपये का पूरा सदुपयोग हो। अनुसंधान द्वारा धन के अपव्यय को रोकने के उपायों पर विचार हो सकता है। अपव्यय को बढ़ावा देने के कारणों का पता लगाया जा सकता है।

8. शिक्षण विधि तन्त्र तथा अध्यापक प्रशिक्षण- अनुसंधान की सहायत से प्रत्येक विपय नवीन ज्ञान के शिक्षण विधियों को विकसित करना होगा। इसके साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों के तदनरूप शिक्षण विधियों को प्रभावी बनाने के लिए अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का समय- समय पर मूल्यांकन करना होगा। अनुसंधान के द्वारा शिक्षक की प्रभावशीलता में वृद्धि की जा सकती है। तथा प्रशिक्षण के कौन विधियों का विकास किया जा सकता है।

9.शैक्षिण मापन और मूल्यांकन - हमारे देश में शिक्षा में अच्छे मापन यन्त्रों परीक्षा की बहुत कमी है। इस कारण छात्रों का मूल्यांकन वैध तथा विश्वसनीय नहीं होता है। शैक्षिक अनुसंधान द्वारा वस्तुनिष्ठ तथा विश्वसनीयता परीक्षण का निर्माण किया जा सकता है। आजकल देश में अधिकतर उन परीक्षण का उपयोग होता है जो विदेशों में बने है।

10. तुलनात्मक शिक्षा- विभिन्न देशों को शिक्षा अवस्था का तुलनात्मक अध्ययन अपने देश की शिक्षा व्यवस्थ में सुधार लाने की दृष्टि से उपयोगी रहता है। किन्तु अपना देश भी इतना विशाल कि कुछ क्षेत्रों के लिए राज्य स्तर पर शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4.5 शैक्षिक अनुसंधान के सोपान (Steps of Educational Research). अनुसंधान एक सुनियोजित प्रक्रिया होती है। अनुसंधान की योजना बनाना सबसे पहली प्रक्रिया है। योजना निर्माण में बहुत-सी ऐसी आवश्यक बातें निश्चित कर दी जाती हैं। जिनके आधार पर अनुसंधान किया जाता है। शैक्षणिक अनुसंधान एक खर्चीला काम है। इसमें धन, श्रम और बुद्धि का भरपूर उपयोग होता है। धन के बिना तो शैक्षणिक अनुसंधान हो ही सकता है। अनुसंधान की एक टोली होती है। जिसमें अनेक विशेषज्ञ होते हैं। आधुनिक अनुसंधान में साधारण मानवीय बौद्धिक क्षमता से लेकर अत्यन्त जटिल कम्प्यूटर तक का उपयोग किया जाता है। एक व्यक्ति द्वारा अनुसंधान इतना साधारण होता है कि उसकी विश्वसनीयता और उपयोगिता दोनों हो संदेहजनक होती है। ऐसे अनुसंधान का महत्व साधारण पत्रकारिता से अधिक नहीं होता है। शैक्षणिक अनुसंधान सम्पन्न व्यक्ति या संस्थाएं ही करती है। इसलिए सम्पन्न देशों में अनेक ऐसी संस्थाएं रहती हैं जो अनुसंधान के लिए अनुदान दिया करती है। सरकार की ओर से वित्तीय अनुदान देने संगठन बनाये जाते हैं। भारत में "इण्डियन काउंसिल आफ सोशल साइन्स रिसर्च, दिल्ली" इसी प्रकार संगठन है। समाज वैज्ञानिक अपने अनुसंधान की योजना और खर्च का बजट बनाकर इस

संगठन के पास भेजते हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के अनुसार इन संगठन द्वारा वित्तीय अनुदान दिया जाता ह।

शैक्षिक अनुसंधान की योजना बनाना और उसे कार्यक्रम देना,इस प्रकार का कुशल प्रशासन है ।चाहे जिस कोटि का अनुसंधान हो, उसके निम्न सोपान होते हैं।

1. समस्या का चुनाव- अनुसंधान की समस्या का चुनाव इतना सरल नहीं होता है, जितना कि साधारणत: समझा जाता है। समस्या इस प्रकार से निरूपित करनी चाहिए कि उस पर तथ्यगत प्रकाश डाला जा सके। शैक्षणिक घटनाएँ निरन्तर घटा सकती है। परन्तु उनमें समस्या क्या है इसको तर्कबद्ध करना आवश्यक है। मदिरापान घटना के समान है । परन्तु जब हम इसे समस्या के रूप में रखते हैं तभी यह अनुसंधान का विषय बनता है। घटना के विषय में जो जानकारी प्राप्त कर ली जाती है, तो उसके बाद जाँच करने योग्य समस्या बन जाती है। अनुसंधान के उद्देश्य के अनुसार समस्या के दो रूप होते है। पहली सैद्धांतिक समस्या, जिसकी जाँच से तात्कालिक व्यावहारिक सामाधान नहीं निकलता। इस अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्ष से सैद्धान्तिक ज्ञान बढता है। नई अवधारणाएं विकसित होती है और पुरान अवधारणाएं छोड़ दी जाती है। दूसरी, व्यावहारिक समस्या, जिससे किसी तात्कालिक समस्या का समाधान या उपचार बताया जाता है । दोनों ही प्रकार की अनुसंधान समस्याएं एक दूसरे की पूरक है ।

अनुसंधान की समस्या का निरूपण किया जाता है इसलिए वह परिसीमित होती है। इसकी घटना के हर पक्ष पर अनुसंधान नहीं किया जा सकता। अनुसंधान के उद्देश्य के अनुसार समस्या का केन्द्र बिन्दु निर्धारित किया जाता है। समस्या को परिसीमित करना अत्यन्त आवश्यक है। इसके अभाव में अनुसंधान प्रयास विखर जाता है। परिसीमित करने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया जाता है-

अनुसंधानकर्ता का उद्देश्य और रुचि,

आवश्यक सामग्री की उपलब्धि,

प्रस्तावित अनुसंधान से सम्बन्धित सैद्धान्तिक विवेचन और स्थापनाएँ

प्रस्तावित अनुसंधान से सम्बन्धित अन्य अनुसंधानों की जानकारी का सीधा प्रभाव।

4.6 अनुसंधान विषय से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण(Review of Literature on concern Topic of Research)

प्रस्तावित अनुसंधान के विषय से सम्बन्धित यदि कुछ लिखित एवं प्रकाशित सामग्री उपलब्ध है तो उसका अध्ययन करना चाहिए। इस सम्बन्ध में पुस्तकें, अनुसंधान, पत्रिकाएँ, मोनोग्राफ, ऐब्स्ट्रैक्ट और अन्य प्रतिवेदन आदि देखे जाते हैं। इसका एक लाभ तो यह होता है कि अनावश्यक रूप से अनुसंधान को दोहराने की संभावना नहीं रहती। यदि प्रस्तावित समस्या पर पहले से अनुसंधान किया जा चुका है, तो विषय पर दुबारा अनुसंधान करने की आवश्यकता नहीं होती। वैज्ञानिक साहित्य पढ़ने से पह पता चलता है कि अनुसंधान के सम्बन्ध कौन-सी स्थापनाएं की जा सकती हैं। जैसे- नगरीय केन्द्र से जैसे-जैसे दूरी बढ़ती है, अपराध वैसे-ैसे कम होते हैं। यदि अनुसंधानकारण अपनी ओर से स्थापना प्रस्थापनाएं प्रस्तावित करता है तो उसकी भी जाँच हो जाती है। दूसरा लाभ यह है कि साहित्य के अवलोकन से, अनुसंधान संबंधित ज्ञान बढ़ता और परिपक्व होता है, उसकी अन्तर्दृष्टि जागती है। पाँचवा लाभ यह है कि अनुसंधानकर्ता को यह पता चलता है कि कितने पानी में है ? उसे यह पता चलता है कि वह किस मीलिकता के चक्कर में है ? उसके विषय में पहले भी विचार किया जा चुका है। उसे अपने

ज्ञान की कमी का अनुमान होता है और उसके व्यक्तित्व में एक विशेष प्रकार की गम्भीरता उत्पन्न होती है। अवधारण वह शब्द, व शब्दों का समूह या प्रतीक है, जिससे किसी यथार्थ को समझा जाता हैं ; जैसे समूह की अवधारणा से हम जिस यथार्थ का समझते  है , उसमें समूह के नेता ,समूह को शक्ति, समूह में अपनत्व की भावना, समूह का लक्ष्य और प्रत्येक सदस्य की प्रास्थापित भूमिका आदि है । इसी तरह कुछ यथार्थ हम देखते या खोजते हैं और उसे शब्द-समूह अथवा प्रतीक द्वारा प्रदर्शित करते हैं। अनुसंधान प्रारम्भ किया जाता  है। तो उसमें यह समस्या उत्पन्न होती है कि किन अवधारणाओं से कौन-सा यधार्थ पकड़ा जायेगा और किस यथार्थ के लिए कौन अवधारणा परिचालन के अनुसार किया जाता है । इसका अर्थ होता है कि इस अनुसंधान में इस अवधारणा का यह अर्थ है, अर्थात  अवधारणा का अर्थ, अनुसंधान की आवश्यकता के अनुसार निश्चित कर दिया जाता है। अनुसंधान की पूरी संरचना अवधारणाओं पर निर्भर करती है। अगर अनुसंधान 'प्रभाव' पर अनुसंधान करना है तो 'प्रभाव' से क्या समझना है, इसे भी स्पष्ट करना होगा। इसलिर प्रे अवधारणाओं की सीमित पभिाषा और स्पष्टीकरण अत्यन्त हो महत्त्वपूर्ण चरण माना जाता है।